



210

न्यायालय श्रीमान् राजस्व मण्डल, ग्वालियर म.प्र.

सिग 2758-5/16

निगरानी प्र. क्र. -

वर्ष 2015-16

श्री. श्री. राजनी शर्मा
आज दि. 16/8/16 को

गोपीचन्द्र तनय स्व. श्री जीतसिंह शर्मा

सा. ग्राम धरा तह. वा जिला छतरपुर म.प्र. ... आवेदक

// विरुद्ध //

म.प्र. शासन

.. अनावेदक

निगरानी अंतर्गत धारा 50 म.प्र. भू. रा. संहिता 1959.

निगरानी विरुद्ध आदेश श्रीमान् अपर क्लेक्टर महोदय, छतरपुर के
प्र. क्र. 28/निग./अ-19/2007-08 गोपीचन्द्र तनय सूरुा कौरेह में पारित
आदेश दिनांक 17.1.08 के विरुद्ध पेश है -

1:-

यहकि प्रकरण के तथ्य इस प्रकार है कि भूमि छतरा नंबर
114, रकवा 5.399 स्थित ग्राम धरा तहसील जिला छतरपुर म.प्र. की
भूमि के पूर्व भूमि स्वामी निगरानीकर्ता के पिता जीतसिंह तनय श्री
बंशोपाज शर्मा थे, जिनका भूमि स्वामी के रूपमें राजस्वरिकार्ड में
नाम अंकित था बाद में बगैर किसी सक्षम अधिकारी के आदेश के
भूमि म.प्र. शासन दर्ज कर ग्राम के सूरुा कौंदर, मारु कौंदर के नाम
उक्त भूमि में से रकवा 1.00-1.00 हेक्टेयर के पट्टे आबंटित कर
दिए गए । जैसे ही उक्त निगरानीकर्ता को उपरोक्त तथ्य की
जानकारी हुई तो उसके द्वारा मान. अनुविभागीय अधिकारी छतरपुर
के न्यायालय में अपील प्रस्तुत की थी जो दिनांक 23.06.06 को
प्रस्तुत किया जो निरस्त कर दी गई तब उसके विरुद्ध आवेदक ने
माननीय अपर क्लेक्टर महोदय के न्यायालय में निग. प्र. क्र. 28/19/
07-08 प्रस्तुत की जिसमें दिनांक 17.01.08 के निर्णय के द्वारा

.. 2 ..

राजस्व मण्डल मध्यप्रदेश ग्वालियर

अनुवृत्ति आदेश पृष्ठ

प्रकरण क्रमांक निगरानी 2758-एक/16

जिला -छतरपुर

दिनांक

था

कार्यवाही तथा आदेश

दिनांक
आदेश
हरकोश

16. 8.16

आवेदक के अधिवक्ता श्रीमती रजनी वशिष्ठ शर्मा उपस्थित। एव अनावेदक शासन की और से शासकीय पैनल अभिभाषक उपस्थित। उभय पक्षों के अभिभाषकों के तर्क निगरानी ग्राह्यता एवं धारा-5 के आवेदन पर श्रवण किये गये। धारा-5 का आवेदन समाधानकारक होने के कारण मान्य किया जाता है।

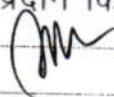
यह निगरानी अपर कलेक्टर जिला छतरपुर द्वारा प्रकरण क्रमांक 28/अ-19/2007-08 निगरानी में पारित आदेश दिनांक 17-1-2008 के विरुद्ध म0प्र भू-राजस्व संहिता की धारा -50 के अन्तर्गत प्रस्तुत की गयी है।

2- प्रकरण के संक्षिप्त तथ्य इस प्रकार है कि ग्राम थरा, तहसील व जिला छतरपुर स्थित भूमि सर्वे क्रमांक 114 रकबा 5.399 के भूमिस्वामी आवेदक के पिता जीत सिंह थे। जीत सिंह का नाम राजस्व अभिलेखों में अंकित था। उक्त प्रविष्टि को हटाकर उसके स्थान पर मध्य प्रदेश शासन अंकित कर दिया गया। तथा भूमि का पट्टा दे दिया गया। उक्त तथ्य की जानकारी होने पर आवेदक द्वारा अनुविभागीय अधिकारी के समक्ष अपील प्रस्तुत की गयी जिसे अनुविभागीय अधिकारी द्वारा निरस्त किया गया। अनुविभागीय अधिकारी के उक्त आदेश के विरुद्ध आवेदक ने अपर कलेक्टर के समक्ष निगरानी प्रस्तुत की जो निरस्त की गई। अपर कलेक्टर के उक्त आदेश के विरुद्ध यह निगरानी प्रस्तुत की गयी है।





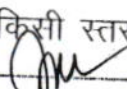
3-आवेदक अभिभाषक द्वारा निगरानी मेमों में वर्णित आधारों एवं अपने तर्कों में बताया गया है कि आवेदक के पिता का नाम राजस्व अभिलेखों में भूमिस्वामी के रूप में अंकित था। तथा आवेदक का अपने पिता का तथा उसके पश्चात उसका भूमि पर निरन्तर वास्तविक आधिपत्य होकर वह कृषि कार्य करता चला आ रहा है. आवेदक को सुचना एवं सुनवायी का कोई अवसर दिये बिना एवं बिना किसी सक्षम अधिकारी के आदेश के आवेदक के पिता के नाम की चली आ रही भूमिस्वामी स्वत्व की प्रविष्टी को विलोपित कर तथा कथित रूप से भूमि पर म0प्र0 शासन अंकित करने की जो कार्यवाही की गयी है वह पूर्णतः विधि विपरीत है. भूमि कभी शासकीय भूमि नहीं रही है, भूमि आवेदक के पूर्वजों की ही है. अनुविभागीय अधिकारी ने उनके समक्ष प्रस्तुत अपील में पट्टाधारी को दिये गये पट्टे को अनुचित मानकर निरस्त किया गया, किन्तु आवेदक द्वारा उक्त प्रविष्टि को हटाये जाने के सम्बन्ध में किये गये निवेदन को अभिलेख को देखे बिना एवं बिना किसी साक्ष्य लिये निरस्त कर दिया गया. अपर कलेक्टर के समक्ष आवेदक ने जो तथ्य उठाये थे उन पर अपर कलेक्टर महोदय ने कोई विचार न करते हुए मनमाने आधारों पर विवादित आदेश पारित किया गया है जो स्थिर रखे जाने योग्य नहीं है. आवेदक अभिभाषक ने अपने तर्कों में यह भी बताया की अधिनस्थ न्यायालय ने अपने आदेश में यह माना है कि आवेदक के पिता का नाम राजस्व अभिलेखों में वर्ष 1952-53 से 55-56 तथा संवत् 2009 से 2012 तक भूमि स्वामी के रूप में प्रविष्ट था, किन्तु उपरोक्त बिन्दुओं को अनदेखा करते हुए विवादित आदेश पारित किये गये हैं जो स्थिर रखे जाने योग्य नहीं है, इस कारण से उपरोक्त आदेशों को निरस्त किया जाये तथा यह निगरानी स्वीकार कर आवेदक का नाम पूर्वानुसार भूमिस्वामी के रूप में अंकित किये जाने के आदेश प्रदान किये जाये।



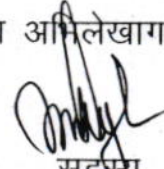
3- अनावेदक अभिभाषक द्वारा अपने तर्कों में अधिनस्थ न्यायालयों की कार्यवाही एवं आदेशों को उचित एवं सही बताते हुए निगरानी निरस्त किये जाने का निवेदन किया है।

4- उभय पक्षों के तर्कों के प्रकाश में मेरे द्वारा अभिलेख का अवलोकन किया गया. अभिलेख के अवलोकन से मैं यह मैं पाता हूँ कि आवेदक के पिता का नाम राजस्व अभिलेखों में वर्ष 1952 से 1955-56 के खसरो एवं संवत् 2009 लगायत 2012 के खसरो में प्रविष्ट है. आवेदक द्वारा इस सम्बन्ध में इस न्यायालय के समक्ष भी खसरो की सत्यप्रतिलिपि प्रस्तुत की गयी है. अभिलेख के अवलोकन से यह भी प्रमाणित होता है कि राजस्व अभिलेखों में उक्त भूमि कभी शासकीय दर्ज किये जाने का कोई कारण नहीं दर्शाया गया है. और न ही ऐसा कोई आदेश अभिलेख पर उपलब्ध है जिसके आधार पर भूमि पर आवेदक के पिता के स्थान पर शासकीय अंकित किया जाना आदेशित किया गया है. अनुविभागीय अधिकारी द्वारा आवेदक द्वारा इस सम्बन्ध में उनके समक्ष प्रस्तुत खसरे वर्ष 1974-75 लगायत 1998-99 पर बिना कोई विचार किये आवेदक को हितबद्ध पक्षकार न मानते हुए अपील को निरस्त करने में विधि का प्रयोग नहीं किया है. क्योंकि उपरोक्त प्रस्तुत दस्तावेजों से यह प्रमाणित होता है कि आवेदक एक हितबद्ध एवं परिवेदित पक्षकार था उसे सूचना एवं सुनवाई का कोई अवसर दिया जाना प्रमाणित नहीं होता है. अपर कलेक्टर द्वारा भी इन बिन्दुओं पर विचार नहीं किया गया है. राजस्व अभिलेखों के संधारण का दायित्व राजस्व अधिकारियों पर है. राजस्व अभिलेख में बिना किसी सक्षम अधिकारी के आदेश के परिवर्तन किया जाना न्यायोचित नहीं है. इस कारण से भूमि को शासकीय अंकित किया जाना तथा उसे बंटन किये जाने की कार्यवाही को किसी स्तर पर स्थिर नहीं रखा जा

B/12



सकता है. अत. उपरोक्त कार्यवाही विधि विपरीत होने से निरस्त की जाती है. तथा ग्राम थरा तहसील व जिला छतरपुर में स्थित भूमि सर्वे क्रमांक 114 रकबा 5.399 जो कि पूर्व में राजस्व अभिलेखों में आवेदक के पिता जीत सिंह तनय वंशगोपाल के नाम अंकित थी, उनके फौत होने से उनके पुत्र गोपीचन्द तनय स्व० जीतसिंह शर्मा के नाम, पर की गयी म०प्र० शासन के नाम की प्रविष्टि को विलोपित करते हुए आवेदक के नाम अंकित किये जाने के आदेश प्रदान किये जाते है. उपरोक्तानुसार यह निगरानी आवेदन पत्र स्वीकार किया जाता है। पक्षकार सूचित हों। राजस्व मण्डल का प्रकरण अभिलेखागार में संचय हेतु भेजा जावे।


सदस्य

